Nalanda Open University Gandhi Maidan, Patna.

Soni kumari,research scholar,MU,Counsellor-NOU(department of home science)e-content of B.A/B.Sc ,Part-3(hons),paper-8

Toipc-Unit-10: वृद्धों का मनोविज्ञान- परिवार में वृद्धों का स्थान एवं संबंध

मनुष्य की एक ऐसी अवस्था आती है जब यह शरीर अपनी जैविक की विशेषताओं जैसे विभिन्न अंग-प्रत्यंग एवं ज्ञानेंद्रियों की सक्रियता स्थिरता एवं सबलता सोचने- विचारने ,याद रखने तथा बुद्धि का प्रयोग करने की क्षमता आदि को खोने लगता है और कुछ समय बाद इन्हें पूर्णत: खोकर मृत हो जाता है यही अवस्था वृद्धा अवस्था कहलाती है। जीवन में

यह अवस्था कब प्रारंभ होती है यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता सामान्यत 60 वर्ष की आयु वृद्धावस्था माना जाता है

परिवार में वृद्धों का स्थान एवं संबंध- प्राचीन परिवार में तो वृद्धों का स्थान यह था कि शिशु एवं बालक बालिकाओं की देखरेख, मार्गदर्शन एवं सुझाव अच्छे पारिवारिक संबंध के लिए पारिवारिक नीतियों एवं आचार- विचार के निर्धारक के एवं नियंत्रण के रूप में सर्वदा क्रियाशीलता के रूप में स्थान परिवार में अत्यधिक ऊंचा एवं महत्वपूर्ण था परंतु आधुनिक परिवार ने वृद्धों का स्थान निम्न स्तर पर है। आधुनिक परिवार में संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है यहां पर परिवार की संख्या दो से चार रहती है माता पिता एवं उनके बच्चे दादा-दादी या नाना -नानी बहुत ही कम परिवार में देखने को मिलते हैं। बच्चों के देखने के लिए आया आती है ।

बुजुर्गो कि मदद लेने के लिए जरूरी नहीं समझा जाता मार्गदर्शन एवं सुझाव के लिए भी वृद्धों से पूछा नहीं जाता पारिवारिक नीतियों आचार विचार पर भी उनसे चर्चा नहीं की जाती एकल परिवार में पिढ़ीयों में अंतर होने के कारण वृद्धों को अनावश्यक एवं अनुपयोगी सदस्यों के रूप में समझा जाता है इसलिए परिवार में उन्हें उचित एवं प्रतिष्ठित स्थान नहीं मिलता है। वृद्धों को एकाकीपन का एहसास होता है जिसके कारण वह मानसिक असंतुलन के शिकार हो जाते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वर्तमान कालीन परिवार विशेषकर केंद्रक परिवार में वृद्धों की स्थिति संतोषजनक नहीं है। निश्चित रूप से उन्हें वह स्थान प्राप्त नहीं है जो उन्हें प्राचीन काल परिवार में प्राप्त था।

धन्यवाद।